इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी शब्द 'जंप' का सामान्य जीवन में जिस अर्थ में प्रयोग किया जाता है, पत्रकारिता के क्षेत्र में उसका प्रयोग उसी अर्थ में नहीं होता।

'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका', 'एनसाइक्लोपीडिया इन्कार्ता' एवं 'एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना' आदि ऐसे ही बहुचर्चित विश्वकोश हैं, जिनका कई खण्डों में प्रकाशन हुआ है। इनकी विशद लोकप्रियता एवं ज्ञानवर्धक उपयोगिता से बेहद प्रभावित होकर सबसे पहले भारतीय कोशकार डॉ. नगेन्द्र नाथ बसु ने कई वर्षों के अथक प्रयास से पच्चीस खण्डों में विभाजित 'हिन्दी विश्वकोश' का निर्माण एवं प्रकाशन किया। तदनन्तर डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, भगवतशरण उपाध्याय आदि विद्वानों के संयुक्त परिश्रम से बारह खण्डों में विभाजित एक अन्य 'हिन्दी विश्वकोश' का प्रकाशन भी हुआ।

पाठकों के मन में अक्सर एक सामान्य प्रश्न जरूर होता है कि शब्दकोश और विश्वकोश में क्या अंतर है? दरअसल सामान्य शब्दकोश के केन्द्र में 'शब्द' होते हैं, किन्तु विश्वकोश के केन्द्र में 'विषय का पूर्ण-विवेचन' निहित होता है। यही कारण है कि विश्वकोश में संसार के सभी मुख्य विषयों पर विस्तृत लेख, उनके ऐतिहासिक विवरण, प्रयोग गुण-दोष आदि का विशद्-विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त उस विषय से जुड़े दृष्टांत, उद्धरण, पृष्ठभूमि तथा चित्रादि भी प्रस्तुत किए जाते हैं, ताकि विषय को पूर्णतः स्पष्ट किया जा सके। इस प्रकार विश्वकोश में किसी विषय-वस्तु आदि की प्रकृति, निर्माण-प्रक्रिया, प्रयोग, विधि, शक्ति, स्वरूप आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। जबकि शब्दकोश में शब्दों के उच्चारण, वर्तनी, व्युत्पत्ति, व्याकरणिक-रूप, वर्ण-परिवर्तन, रूप-भेद, अर्थ, व्याख्या, पर्याय, प्रयोग आदि को स्पष्ट किया जाता है।

ई-कोश

ई-कोश को इलेक्ट्रॉनिक कोश भी कहा जाता है, जिसकी सारी सामग्री डिजिटल रूप में उपलब्ध रहती है और जिसका उपयोग विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यमों के सहारे किया जाता है। यह कई रूपों में उपलब्ध होता है। जैसे– सुगम संचालित उपकरण, स्मार्टफोन एप्स, टैबलेट्स एवं कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के रूप में। कंप्यूटर, ई-रीडर आदि उपकरणों में अंतर्निहित प्रयोजनमूलक कार्य-पद्धति के रूप में, सी.डी. अथवा डी.वी.डी. के रूप में, मुद्रित शब्दकोश के साथ विशिष्ट पैकेज के रूप में, मुफ्त अथवा भुगतान के

पश्चात् प्राप्त ऑनलाइन उत्पाद आदि के कई रूपों में ई-कोश प्रयुक्त होता है। आरंभ में ई-कोश के रूप में उपलब्ध शब्दकोश की सामग्री सुनिश्चित होती थी, लेकिन बाद में तैयार किए गए ई-संस्करणों में शब्द ढूंढने की विधि और परिणाम को ज्यादा सरल और उपयुक्त बनाया गया। यद्यपि इन आरंभिक ई-कोशों में स्पेस और अर्थ प्रस्तुति की की सीमाओं के कारण प्रयोक्ताओं को काफी असुविधा होती थी, लेकिन शीघ्र ही मल्टीमीडिया सामग्री के उपयोग से उच्चारण एवं चित्रावली की अपार संभावनाओं ने ई-कोशों को नई ऊँचाइयों पर स्थापित कर दिया। मुद्रित अथवा छपे हुए शब्दकोशों की तुलना में ई-कोशों की शब्द क्षमता कई गुना अधिक होती है और कई बार तो पांच लाख से भी अधिक शब्द, उनके विविध संदर्भों में प्रस्तुत अर्थ आदि को ई-कोशों में सम्मिलित किया जाता है।

इस श्रेणी में नेट कोश, वेबकोश आदि को भी सम्मिलित किया जाता है। आधुनिक युग में विविध क्षेत्रों में त्वरित वैज्ञानिक विकास के फलस्वरूप सूचना प्रौद्योगिकी ने इन्साइक्लोपीडिया के क्षेत्र में भी गुणकारी परिवर्तन किया है और इस समय 'इंटरनेट' पर उपलब्ध कई बहुचर्चित प्रकाशन केन्द्रों द्वारा संचालित इन्साइक्लोपीडिया निरंतर परिवर्धित-परिवर्तित होते रहने वाले संग्रह की तरह हैं। इनमें प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया पहले से बिल्कुल भिन्न है और प्रस्तुत की गई प्रविष्टियां नितांत नवीन एवं प्रचुर सूचनाओं से भरी हैं। जैसे–Everything2, Encarta, h2g2, Wikipedia आदि। ये सभी इंटरनेट पर उपलब्ध ऑनलाइन विश्वकोश की तरह हैं। विकिपीडिया से उपभोक्ता सिर्फ सूचनाएं ही प्राप्त नहीं करता, बल्कि यदि उसे यह आभास होता है कि उपलब्ध सामग्री में कुछ अभाव है, तो वह भी अपनी जानकारी संपादक को भेजकर कर उसमें अपनी सहभागिता दर्ज करा सकता है। साथ ही यदि दर्ज की गई किसी सूचना में कहीं कोई गलती हो और पाठक उसके संदर्भ में प्रामाणिक जानकारी रखता हो तो वह प्रकाशकों की सहायता से उसमें परिवर्तन भी कर सकता है। यही कारण है कि इसे सतत् गतिशील रहने वाला विश्वकोश कहा जाता है और इसमें ज्ञान का अकूत भंडार संचित करने की क्षमता होती है। आज लोगों में जहाँ ज्ञान संचित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है, वहीं ज्ञान बाँटने के क्षेत्र में भी लोग मुक्त भाव से आगे आते हैं। पहले मुद्रित कोश ही ज्यादा प्रकाशित होते थे, लेकिन सूचना क्रांति के साथ कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ता गया और इंटरनेट की सफलता के बाद कोश के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों ने यह महसूस किया कि कोश को इंटरनेट के माध्यम से लोगों

Scanned with CamScanner

तक पहुँचाया जाए। फिर एक ऐसे ऑनलाइन विश्वकोश की परिकल्पना की गई जिसमें सभी विषयों को शामिल किया जाए एवं यथासंभव अधिक से अधिक और नवीनतम जानकारी दी जाए। यह कार्य किसी एक व्यक्ति के द्वारा संपन्न नहीं किया जा सकता था, इसलिए सामूहिक योगदान को प्रश्रय दिया गया और यही बाद में 'विकिपीडिया' के रूप में सामने आया।

सबसे विशेष बात यह है कि 'ऑनलाइन' या 'नेट' विश्वकोश नामक उपक्रम अपनी तकनीकी खासियत की वजह से प्रत्येक उपभोक्ता की सेवा लेने एवं देने के लिए सदैव तत्पर रहता है। इस तकनीकी की शुरुआत 'विकि' के रूप में सबसे पहले लार्ड कनिंघम द्वारा की गई थी और 'विकि' तकनीकी में निहित अपार संभावनाओं से प्रभावित होकर जिमी वेल्स ने अपने साथियों के साथ मिलकर 'न्यूपीडिया' के नए संस्करण 'विकिपीडिया' को मूर्त रूप प्रदान किया। अमेरिका के टेंपा फ्लोरिडा में इसके मुख्य सर्वर को स्थापित किया गया और एम्सटर्डम, सिओल आदि में अतिरिक्त सर्वर लगाए गए। इसका प्रारंभ 15 जनवरी सन् 2001 ई. में हुआ और पहली सामग्री अंग्रेजी में तैयार की गई। फिर मई (2001) महीने से ही अन्य भाषाओं के विकिपीडिया बनने शुरू हो गए। अब तो स्थिति यह है कि विकिपीडिया की कई अन्तर्शाखाएं विकसित हो चुकी हैं। जैसे–विक्शनरी, विकिबुक्स, विकिसोर्स, मेटाविकि आदि।

इधर भारत सरकार के राजभाषा संभाग ने देश भर के सरकारी-गैर-सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए ई-महाशब्दकोश भी शुरू किया गया है, जिसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

ई-महाशब्दकोश (वेब पता–http://e-mahashabdkosh.rb-aai.in/HindiInterface.aspx)

भारत सरकार के गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग केन्द्र सरकार के कार्यालयों और संगठनों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कार्यरत है। काफी समय से केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के कार्य में हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु अनेक प्रयास किए गए हैं। अनुभव बताता है कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों और संगठनों में बड़ी संख्या में कर्मचारी अपने क्रियाकलापों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के इच्छुक हैं, परंतु पर्याप्त तकनीकी सुविधाओं के अभाव में हिंदी भाषा का प्रयोग प्रभावशाली ढंग से नहीं कर पाते हैं। सरकार द्वारा हिंदी में सहजता से कार्य करने के लिए प्रभावी साधनों को मुहैया कराने पर विचार किया गया है। हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से आधुनिक तकनीक के समावेश के विचार ने उन लोगों

की समस्या के समाधान के रूप में जन्म लिया जो हिंदी में कार्य करने के इच्छुक हैं परंतु पर्याप्त सुविधा के अभाव में ऐसा करने से झिझक रहे हैं।

सरकारी कार्यालयों में सरल व प्रभावी तरीके से हिंदी में कार्य करने के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेयरों के विकास हेतु राजभाषा विभाग ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की कंप्यूटिंग कंपनी सी-डैक, पुणे के साथ एक समझौता किया है। पिछले कुछ वर्षों में विकसित सॉफ्टवेयरों में हिंदी भाषा का स्वयं शिक्षण (लीला- शृंखला), मंत्रा शृंखला द्वारा चुने गए कार्यक्षेत्रों में अंग्रेजी से हिंदी तुरंत अनुवाद, हिंदी डिक्टेशन के लिए श्रुतलेखन सॉफ्टवेयर, अंग्रेजी स्पीच की पहचान कर उसे हिंदी में अनुवाद के लिए वाचांतर सॉफ्टवेयर शामिल है। सॉफ्टवेयरों के विकास की इस शृंखला में नवीनतम विकास राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक के माध्यम से ई-महाशब्दकोश का विकास है, जो कि एक द्विभाषी-द्विआयामी उच्चारण शब्दकोश है। प्रौद्योगिकी को हिंदी के प्रयोग से जोड़कर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के इरादे से हिंदी प्रेमियों के लिए ई-महाशब्दकोश को प्रस्तुत करना भी लिए हर्ष और गर्व की बात है। ई-महाशब्दकोश के वर्तमान शुरुआती संस्करण में प्रशासनिक कार्यक्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को शामिल किया गया है। ई-महाशब्दकोश की विशेषताएं निम्न प्रकार होंगी–

- देवनागरी लिपि यूनिकोड फॉण्ट में प्रदर्शित की जाएगी
- हिंदी/अंग्रेजी शब्दों का उच्चारण
- स्पष्ट प्रारूप, आसान व त्वरित शब्द खोज
- अक्षर क्रम में शब्दों की सूची, सीधा शब्द खोज
- अंग्रेजी/हिंदी अक्षरों द्वारा शब्द खोज
- स्पीच इंटरफेस के साथ हिंदी शब्द का उच्चारण
- सामान्य शब्दकोश में सामान्यतया न पाए जाने वाले शब्द रूपों का पूरा विवरण तथा भाषा विशेष का शुद्ध उच्चारण
- शब्द/मुहावरों का प्रयोग

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव पी.वी. वल्सला जी. कुट्टी को पूरा विश्वास है कि–

1. ई-महाशब्दकोश प्रयोगकर्ताओं में बहुत लोकप्रिय होगा क्योंकि यह केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में सामान्य कार्य करने में आने वाली अनेक बाधाओं को दूर करने में सहायक होगा। वास्तव में यह केवल सीमित अर्थों में एक शब्दकोश ही नहीं वरन् इससे आगे अपनी पहुंच को ले जाते हुए यह

Scanned with CamScanner

शुद्ध उच्चारण, विशेष प्रयोगकर्ताओं के लिए विशिष्ट अर्थ देना, शब्दों और मुहावरों को प्रयोग करने का विवरण आदि सुविधाओं को देने में सहायक है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह शब्दकोश मुहावरों को प्रयोग करने में आने वाली दिक्कतों को दूर करने तथा उनको ठीक से दिखाने में प्रयोगकर्ता के लिए लाभकारी होगा।

2. ई-महाशब्दकोश उनके लिए बहुत उपयोगी होगा जो वास्तव में हिंदी में काम करना चाहते हैं। सी-डैक, पुणे के सहयोग से राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए सॉफ्टवेयरों में यह एक उल्लेखनीय उत्पाद होगा। ई-महाशब्दकोश की सूची में आगे सुधार के लिए यह आवश्यक होगा कि अधिक से अधिक लोग इसका प्रयोग करके अपना बहुमूल्य फीड-बैक राजभाषा विभाग या सी-डैक को भेजें ताकि ई-महाशब्दकोश की सक्षमता और दक्षता को अति उच्च स्तर तक ले जाया जा सके।

आज हिन्दी विकिपीडिया भी तैयार हो चुका है। हिन्दी विकिपीडिया की शुरुआत जुलाई 2003 ई. में हुआ था और इसके प्रबंधन का दायित्व आरजाह में रहने वाली पूर्णिमा वर्मन के अधीन है। 2009 के अंत तक इसमें विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग 23 हजार लेख प्रकाशित हो चुके थे। हिन्दी विकिपीडिया में उपलब्ध सामग्री को ध्यान से देखने पर यह विदित होता है कि इस नेट विश्वकोश में प्रस्तुत सामग्री को संयोजित करने के लिए करीब 10 श्रेणियाँ बनाई गई हैं और उन्हें भी कई उप-श्रेणियों में विभाजित किया गया है। प्रमुख श्रेणियाँ इस प्रकार हैं– सामाजिक विज्ञान और दर्शन, ललितकला और संस्कृति, भूगोल, प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी, धर्म, विज्ञान और स्वास्थ्य, मनोरंजन और खेल, भाषा और साहित्य, जीवनी, इतिहास। इनमें से भाषा और साहित्य श्रेणी के अन्तर्गत भाषा उप-श्रेणी में करीब 75 लेख उपलब्ध हैं। दरअसल हिन्दी विकिपीडिया इंटरनेट पर आधारित एक सतत् क्रियाशील बहुभाषी एवं बहुप्रयुक्त मुक्त विश्वकोश है। इसमें मानविकी, विज्ञान, तकनीकी, इतिहास, खगोल आदि सभी विषयों से जुड़ी सामग्री संकलित की गई है। इस विकिपीडिया में नित्य-प्रतिदिन नई सामग्री जुड़ती रहती है, क्योंकि इसका स्वरूप ही निरंतर विस्तृत होते रहने वाला है। निश्चय ही इंटरनेट पर उपलब्ध विकिपीडिया एक ऐसी तकनीकी है जिसके अन्तर्गत यदि कुछ महत्वपूर्ण पृष्ठों को छोड़ दिया जाए तो जालघर (वेबसाइट) पर उपलब्ध गतिशील सामग्री को कहीं से भी सर्वर की सहायता से संपादित, संशोधित एवं परिवर्तित करने की

सुविधा होती है। चूँकि भारत सरकार ने भी 'ज्ञान आयोग' की गठन के साथ यह जता दिया है कि आज हम बिना बदलती दुनिया का मुकाबला हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहकर नहीं कर सकते। अब तो नॉलेज सोसाइटी का जमाना है और 'नॉलेज इज पावर' का प्रण लेना ही होगा। आज की युवापीढ़ी से देश को बहुत उम्मीदें है पूरे पूरा भरोसा है कि इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ नेटकोशों का उपयोग भी बढ़ेगा।

Scanned with CamScanner